

## वशिव जूनोससि दविस

### प्रलिमिस के लयि:

वशिव जूनोससि दविस, [जूनोटकि रोग](#), [वन हेल्थ](#)

### मेन्स के लयि:

वन हेल्थ अवधारणा एवं इसका महत्त्व, जूनोटकि रोग और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के पशुपालन और डेयरी विभाग ने [आजादी का अमृत महोत्सव](#) पहल के हिस्से के रूप में वशिव जूनोससि दविस (6 जुलाई, 2023) पर [जूनोटकि रोगों](#) पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को [जूनोटकि रोग के जोखिमों एवं रोकथाम के लयि राष्ट्रीय प्रयासों के बारे में शक्ति](#) करना था। पशुओं के साथ निकट संपर्क के कारण [किसानों को जूनोटकि रोग होने का खतरा अधिक](#) होता है।
- जूनोटकि रोग जोखिमों को संबोधित करने हेतु ["वन हेल्थ" अवधारणा](#) के महत्त्व पर बल दिया गया है।

## वशिव जूनोससि दविस:

- इतिहास:
  - वशिव जूनोससि दविस एक [जूनोटकि बीमारी के खिलाफ पहले टीकाकरण की वर्षगाँठ का प्रतीक](#) है।
  - [6 जुलाई, 1885](#) को फ्रांसीसी वैज्ञानिक [लुई पाश्चर](#) ने जूनोटकि रोग का पहला टीका सफलतापूर्वक लगाया।
- महत्त्व:
  - वशिव जूनोससि दविस लोगों को मानव और पशु स्वास्थ्य पर [जूनोटकि रोगों के जोखिमों और प्रभावों के बारे में शक्ति](#) करता है।
  - [वशिव स्वास्थ्य संगठन \(WHO\)](#) के अनुसार, [60%](#) ज्ञात संक्रामक रोग और [75%](#) उभरते संक्रामक रोग [जूनोटकि](#) हैं।

## जूनोटकि रोग:

- परिचय:
  - जूनोटकि रोग वे बीमारियाँ हैं जो [पशुओं और मनुष्यों के बीच फैल सकती हैं](#)। ये रोग [बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी या कवक के कारण](#) हो सकते हैं।
- वर्गीकरण:
  - रोगजनकों पर आधारित:
    - [बैक्टीरियल जूनोज़](#): ये रोग जीवाणु संक्रमण के कारण होते हैं जो पशुओं से मनुष्यों में फैल सकते हैं।
      - उदाहरणों में [एंथरेक्स](#) और [ब्रुसेल्लोसिस](#) शामिल हैं।
    - वायरल जूनोज़: प्रसिद्ध वायरल जूनोटकि रोगों में [रेबीज़](#), [इबोला](#) और [कोवडि-19](#) शामिल हैं।
    - परजीवी जूनोज़: [टोक्सोप्लासमोसिस](#) और [लीशमैनियासिस](#) जैसे रोग इस श्रेणी में आते हैं।
    - फंगल जूनोज़: दाद जैसे जूनोटकि फंगल संक्रमण, कवक के कारण होते हैं जो जानवरों से मनुष्यों में फैल सकते हैं।
  - पशु प्रजातियों पर आधारित:
    - वन्यजीव जूनोज़: इन बीमारियों में मुख्य रूप से मनुष्यों और वन्यजीवों के बीच परस्पर क्रिया शामिल होती है, जैसे ककितकों द्वारा प्रसारित हंतावायरस संक्रमण या जंगली पक्षियों द्वारा फैलने वाली बीमारियाँ, जैसे [एवियन इन्फ्लुएंजा \(Bird Flu\)](#)।
    - घरेलू पशु जूनोज़: [मवेशियों से ब्रुसेल्लोसिस \(Brucellosis\)](#) या [बलिलियों से होने वाला टोक्सोप्लासमोसिस \(Toxoplasmosis\)](#) जैसे रोग इस श्रेणी में आते हैं।
  - ट्रांसमिशन के तरीके के आधार पर:

- **प्रत्यक्ष संपर्क जूनोज:** संक्रमण जो संक्रमित जानवरों, उनके शरीर के तरल पदार्थ या दूषित सतहों के सीधे संपर्क से होता है।
    - उदाहरणों में जानवरों के काटने से फैलने वाला रेबीज़ और संक्रमित पशुओं के संपर्क से क्यू बुखार शामिल हैं।
  - **सदृश-जनित जूनोज:** मच्छरों और कलिनी जैसे वाहकों द्वारा फैलने वाले रोग।
    - उदाहरणतः कलिनी से फैलने वाला लाइम रोग और मच्छरों से फैलने वाला डेंगु बुखार शामिल हैं।
  - **जलजनित जूनोज:** दूषित जल स्रोतों से **लेप्टोसपायरोसिस (Leptospirosis)** जलजनित जूनोटिक रोग का एक उदाहरण है।
- **जूनोटिक रोगों का कारण:**
- जूनोटिक रोगों का उद्भव और प्रसार कई कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें पर्यावरणीय परिवर्तन, वन्यजीव संपर्क, पशुधन कृषि के तरीके और मानव व्यवहार शामिल हैं।
  - प्राकृतिक आवासों में अतिक्रमण, वन्यजीव व्यापार, अपर्याप्त खाद्य सुरक्षा उपाय और अनुचित स्वच्छता जूनोटिक रोगों के संचरण में योगदान करते हैं।
- **रोकथाम रणनीतियाँ:**
- जूनोटिक रोगों की रोकथाम और नियंत्रण हेतु बहुक्षेत्रीय सहयोग आवश्यक है।
  - "वन हेल्थ" दृष्टिकोण मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण क्षेत्रों के बीच सहयोग पर जोर देता है।
  - जूनोटिक रोगों की शीघ्र पहचान और नगिरानी प्रणालियाँ प्रकोप एवं महामारी को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
  - हाथ धोने, खाद्य सुरक्षा उपायों और जानवरों की सुरक्षा देख-रेख जैसी स्वच्छता वधियों को बढ़ावा देने से संचरण के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है।
  - जानवरों हेतु टीकाकरण कार्यक्रम, विशेष रूप से मनुष्यों के निकट संपर्क में रहने वाले जानवरों में जूनोटिक रोगों को रोकने में प्रभावी हो सकते हैं।
  - जूनोटिक रोगों और उनकी रोकथाम के बारे में सार्वजनिक जागरूकता तथा शिक्षा में सुधार करना ज़िम्मेदार व्यवहार को बढ़ावा देने एवं संचरण के जोखिम को कम करने हेतु महत्वपूर्ण है।

## जूनोटिक रोगों से संबंधित भारत की पहल:

- **राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP):**
  - इसने दो प्रमुख जूनोटिक रोगों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई: **पैर और मुँह रोग (Foot & Mouth Disease-FMD)** एवं **बरुसेलोसिस**।
- **मोबाइल पशु चिकित्सा इकाइयाँ (MVU):**
  - MVU को किसानों के दरवाज़े पर पशु चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने हेतु शुरू किया गया है, जिसमें रोग निदान, उपचार, छोटी सर्जरी और रोगग्रस्त जानवरों के प्रबंधन के बारे में जागरूकता बढ़ाना शामिल है।
- **पशु जनम नियंत्रण (कृत्त) नयिम, 2023:**
  - ये नयिम जनसंख्या स्थिरिकरण के साधन के रूप में **आवारा कृत्तों के रेबीज़ रोधी टीकाकरण और बधियाकरण** पर केंद्रित हैं।
- **जूनोज की रोकथाम और नियंत्रण के लिये राष्ट्रीय वन हेल्थ कार्यक्रम:**
  - यह अंतर-क्षेत्रीय समन्वय और सहयोग के माध्यम से जूनोटिक रोगों का अनुवीक्षण, निदान, रोकथाम और नियंत्रण तंत्र को मज़बूत करने पर केंद्रित है।
- **टीकाकरण के प्रयास:**
  - भैंस, भेड़, बकरियों और सूअरों की आबादी में 100% FMD वैक्सीन कवरेज और साथ ही 4 से 8 महीने की उम्र के बीच के मादा गोजातीय बछड़ों में 100% बरुसेलोसिस टीकाकरण का लक्ष्य प्राप्त करना।

## वन हेल्थ अवधारणा:

//

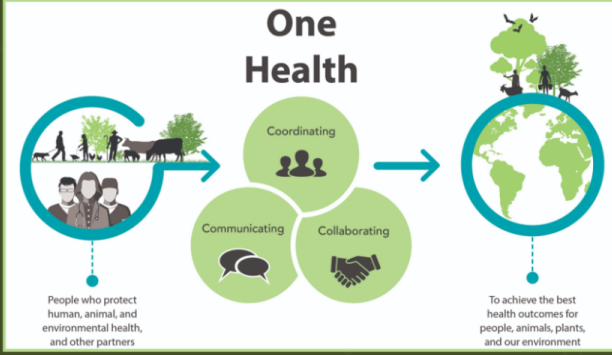
# वन हेल्थ ONE HEALTH

वन हेल्थ ट्राई पार्टी अलायन्स यानी FAO, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE)

WHO के बीच समझौते के आधार पर गतिविधियों का एक सेट प्रदान करता है जिसका उद्देश्य मानव-पशु-पौधे-पर्यावरण इंटरफेस से जुड़ी स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को दूर करना है।

## दृष्टिकोण

- मानवों और लोगों में बैक्टीरियल रोग के प्रकोप को रोकना
- स्वास्थ्य सुरक्षा में सुधार
- MMR संक्रमण को कम करना और मानव तथा पशु स्वास्थ्य में सुधार करना
- वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा में सुधार करना
- नैव विविधता की रक्षा और संरक्षण



## वन हेल्थ से संबंधित तथ्य

- मानव रोगों का कारण बनने वाले 60% रोगजनक, घरेलू पशुओं या वन्यजीवों से उत्पन्न होते हैं
- वैश्विक पशु उत्पादन में 20% की गिरावट पशु रोगों से जुड़ी हुई है
- नब मूल वन आवरण का 25% से अधिक नष्ट हो जाता है तो मनुष्यों और उनके पशुओं की वन्यजीवों से सामना करने की संभावना अधिक होती है

## वन हेल्थ संयुक्त कार्य योजना

- स्वास्थ्य और कृषि संगठन (FAO), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP), विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) द्वारा एक नई चतुष्पक्षी पहल
- यह योजना वर्ष 2022-2026 तक वैध है और इसका उद्देश्य वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य चुनौतियों को कम करना है।

## राष्ट्रीय वन हेल्थ मिशन (NOHM)

### NOHM

- इसका उद्देश्य मानव और पशु दोनों क्षेत्रों की प्राथमिकता वाली बीमारियों के विरुद्ध समग्र महामारी की तैयारी और एकीकृत रोग नियंत्रण को प्राप्त करने के लिये समन्वय करना है

### हाल ही में उठाए गए कदम

- पशु महामारी तैयार पहल (APPI)
- वन हेल्थ के लिये पशु स्वास्थ्य प्रणाली सहायता (AHSSOH)

### पूर्व में की गई पहलें

- एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम, 2004
- नूतन से निपटने के लिये एक बहु-विषयक रोड मैप (2008)

### घटक



   
Drishti IAS

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारत में 'सभी के लिये स्वास्थ्य' को प्राप्त करने के लिये समुचित स्थानीय सामुदायिक स्तरीय स्वास्थ्य देखभाल का मध्यकक्ष एक पूर्वापरेक्षा है। व्याख्या कीजिये। (2018)

स्रोत: पी.आई.बी.

